सम्पादक के नाम

रवीश का पत्र दिवंगत पुलिस ऑफिसर के नाम

सुबोध कुमार सिंह जी,

मैं आपको एक पत्र लिख रहा हूं। मुझे मालूम है कि यह पत्र आप तक कभी नहीं पहुंचे सकेगा। लेकिन मैं चाहता हूं कि आपकी हत्या करने वाली भीड़ में शामिल लड़कों तक पहुंच जाए। उनमें से किसी एक लड़के के पास भी यह पत्र पहुंच गया तो समझूंगा कि यह पत्र आप तक पहुंच गया। जो आपके हत्यारे हैं, उन तक आपके नाम लिखा पत्र क्यों पहुंचना चाहिए? इसलिए कि उन लड़कों को सुबोध कुमार सिंह के जैसा पिता नहीं मिला। अगर आपके जैसा पिता मिला होता तो वे लड़के अभिषेक सिंह की तरह होते। वे नफ़रत को उकसाने वाली भावनाओं के तैश में आकर हत्या करने नहीं जाते। इसलिए आपके नाम पत्र लिख रहा हूं।

इस वक्त नयाबास और चिंगरावठी गांव के पिता असहाय और अकेला महसूस कर रहे होंगे। कोई पिता नहीं चाहता है कि उसके बेटे का नाम हत्या के आरोप में आए। रातों रात हत्या के आरोपी बन चुके अपने बच्चों को लेकर उन्हें कैसे-कैसे सपने आते होंगे। मैं यह सोच कर कांप जा रहा हूं। हिन्दू मुस्लिम नफ़रत की राजनीति ने उनका सबकुछ लूट लिया है। मैं अक्सर अपने भाषणों में कहता हूं। एक पहलू ख़ान की हत्या के लिए हिन्दू घरों में पचास हत्यारे पैदा किए जा रहे हैं। इसलिए पहलू ख़ान की हत्या से सहानुभूति नहीं है तो भी आप सहानुभूति रखें क्योंकि यह पचास हिन्दू बेटों के हत्यारा बनने से बचाने के लिए बहुत ज़रूरी है। अख़लाक की हत्या में शामिल भीड़ भले ही कोर्ट से बच जाएगी मगर कभी भी अपने गांव में पुलिस को आते देखेगी तो उनमें शामिल लोगों का दिल एक बार ज़रूर धड़केगा कि कहीं किसी ने बता तो नहीं दिया।

नयाबांस और चिंगरागाठी के नौजवान और उनके माता-पिता इस अपराध-बोध को नहीं संभाल पाएंगे। उन्हें तो अब हर ईंट पर अपने बेटों की उंगलियों के निशान दिखती होगी, लगता होगा कि कहीं इस ईंट के सहारे पुलिस उनके बेटे तक न पहुंच जाए। रिश्तेदारों को फोन करते होंगे कि कुछ दिन के लिए बेटे को रख लो। वकीलों से गिड़गिड़ाते होंगे। पंडितों को दान देते होंगे कि कोई मंत्र पढ़कर बचा लो। उनकी दुनिया बर्बाद हो गई है। अगर राजनीति उन्हें बचा भी लेगी तो उसकी कीमत वसूलेगी। उनसे और हत्याएं करवाएगी। इन गावों के लड़के सांप्रदायिक झोंके में आकर लंबे समय के लिए मुश्किलों में फंस गए हैं। इसलिए आपके नाम पत्र लिख रहा हूं ताकि ये पढ़ सकें।

अभिषेक से बात करते हुए मुझे साफ-साफ दिख रहा था कि वो आपसे कितना प्यार करता है। इतना कि आपको खो देने के बाद भी आपकी दी हुई तालीम को सीने से लगाए हुए हैं। मैं आपसे नहीं मिला लेकिन अब आपसे मिल रहा हूं। अभिषेक की बातों के ज़रिए मैं ही नहीं, लाखों लोग आपको देख रहे हैं। उस अच्छे पुलिस अफसर की तरह जो दिन भर सख़्त दिखने की नौकरी के बाद घर आता है तो अपने बच्चों के लिए टॉफियां लाता है। खिलौने लाता है। वर्दी उतारकर अपने बच्चों को सीने से लगा लेता है. उनके साथ खेलता है। बातें करता है। अच्छी बातें सीखाता है. उन्हें नागरिक बनना सीखा रहा है।

मेरे पिता का एक ही सपना था, आप कुछ बनें या न बनें एक अच्छा नागरिक ज़रूर बनें। यह आपके बेटे अभिषेक ने कहा है। सुनने वालों को यकीन नहीं हुआ कि अपने प्यारे पिता को खोकर भी एक बेटा इतनी तार्किक बात कह रहा है। ऐसा लगता है कि आखरी बार के लिए आप उस भीड़ से यही कहने गए थे, जिसने आपकी बात नहीं सुनी। वो बात आपके सीने में अटकी रही और अभिषेक के ज़रिए बाहर आ गई। अभिषेक ने कहा कि मॉब लिंचिंग की संस्कृति से कुछ हासिल नहीं होने वाला है। कहीं ऐसा दिन न आ जाए कि हम भारत में एक दूसरे को मार रहे हैं। कहां पाकिस्तान, कहां चीन कहां कोई और, किसी की कोई ज़रूरत नहीं पड़ेगी कुछ करने के लिए। आज मेरे पिताजी की मौत हुई है, कल पता चला कोई आईजी (इंस्पेक्टर जनरल) को ये लोग मार दिया फिर किसी मंत्री को मार दिया। क्या मॉब लिंचिंग कल्चर ऐसे चलना चाहिए?

सुबोध कुमार सिंह जी, आप जिस पुलिस विभाग के हैं, उसके बारे में आप भी जानते ही होंगे। उस पुलिस के बड़े अफ़सर की बुज़दिली नज़र आ रही थी, जब वे किसी संगठन का नाम लेने से बच रहे थे। उनकी वर्दी किसी कमज़ोर को फंसा देने या दो लाठी मार कर कुछ भी उगलवा लेने के ही काम आती रही है। ऐसी पुलिस के पास सिर्फ वर्दी ही बची होती है। ईमान और ग़ैरत नहीं होती। जो धौंस होती है वो पुलिस की अपनी नहीं होती, उनके आका की दी हुई होती है। आपकी हत्या के तीन दिन हो गए और वो पुलिस 27 नामज़द आरोपियों में से मात्र तीन को ही पकड़ पाई है। यूपी पुलिस को अपने थानों के बाहर एक नोटिस टांग देना चाहिए। वर्दी से तो हम पुलिस हैं, ईमान से हम पुलिस नही है । हमारी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था ने इस पुलिस की रचना की है। वह कहां निर्दोष है। उसने पुलिस की हर ख़राबी को स्वीकार किया है। उसमें वह शामिल रही है। अच्छे अफ़सरों को कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। अपने विभाग में विस्थापित की तरह जीते हैं। इस पुलिस व्यवस्था में रहते हुए आप परिवार में बिल्कुल अलग दिखते हैं। अब मैं समझ रहा हूं कि उसी पुलिस के कुछ लोग घरों में लौट कर सुबोध कुमार सिंह की तरह भी होते हैं।

फिर भी मुझे आपकी पुलिस से कोई उम्मीद नहीं है। आपके अफ़सरों से कोई उम्मीद नहीं है। अफसरों का ईमान भले न बचा रहे, ईश्वर उनकी शान बचाए रखे। वर्ना उनके पास जीने के लिए कोई मकसद नहीं होगा। आपके साथी दारोगा जल्दी भूल जाएंगे। कोई बहाना ढूंढ कर तीर्थ यात्रा पर निकल जाएंगे ताकि उनका सबकुछ ठीक-ठाक चलता रहे। ड्यूटी पर भी रहेंगे तो वे लोग आपके हत्यारों को पकड़ना छोड़ उस प्रेस रिलीज़ के अमल में लग गए होंगे जिसमें लिखा था कि गौकशी में शामिल लोगों के खिलाफ तुरंत कार्रवाई की जाए। मुख्यमंत्री के यहां से जारी बयान में यह तो लिखा नहीं था कि सुबोध कुमार सिंह के हत्यारों को 24 घंटों में पकड़ कर हाज़िर किया जाए। वे भी समझा लेंगे कि ये तो होता ही है पुलिस की नौकरी में।

जाने दीजिए। आपका विभाग अपनी सोच लेगा। मगर हम आपके बारे में सोच रहे हैं। अफसोस कि हम एक अच्छे पिता को उसकी हत्या के बाद जान सके हैं। आप भारत के पिताओं में अपवाद हैं। भारत के ज़्यादातर पिता विचारों की जड़ताओं और संकीर्णताओं के पोषक हैं। वे सिर्फ अपने नियंत्रण में रहने वाला बेटा बनाते हैं। आप अभिषेक को नागरिक बनाना चाहते थे। वह नागरिक ही बना है। अपने प्यारे पिता को खोकर भी वह संविधान के दायरे में बात कर रहा है। पुलिस की नौकरी ने जितना सम्मान नहीं दिया होगा उससे कहीं ज़्यादा अभिषेक ने आपका मान बढ़ाया है। अभिषेक की बातों ने आपको घर-घर में जिदा कर दिया है।

मैं दुआ करता हूं कि अभिषेक कानून की पढ़ाई पूरी करे। अपने संघर्षों से वकालत की दुनिया में ऊंचा मकाम हासिल करे। तमाम तरह की संकीर्णताओं और जड़ताओं से बचा रहे। जिस तरह का संतुलित और तार्किक नौजवान है, मैं चाहूंगा कि एक दिन वह जज भी बने। आपने भारत को एक अच्छा नागरिक दिया है. सुबोध कुमार सिंह आपको मैं सलाम करता हूं।

-रवीश कुमार

क्यों नहीं रुक रही है, कैसे रुकेगी किसानों की आत्महत्या ?

डॉ मनीषा बंगार

किसान आत्महत्या के ये आंकड़े स्तब्ध करने वाले है. 12,000, 11,000,12,500 प्रति वर्ष ? सही है कि National Crime Report Bureau के आंकड़े है ये. ये गुनाह ही नहीं ये नरसंहार है किसानों का! पिछले चार सालों में 2013-2017 तक लगभग 48,000 किसानों ने आत्महत्या की. उसके पहले के पांच सालों में 40,000+ आत्महत्याएं हुई.

ये आंकड़े भी अजीब चीज होते है , इतने रुक्ष होते है कि बहुत बड़ा दु:ख बहुत गहरा दर्द भी छुपा देते है. इन्हें पढ़ कर आपके मन में संवेदना कम ही जागती है. वहीँ उन आंकड़ो में से कोई एक व्यक्ति की कहानी हो तो सारा दर्दनाक दृश्य आँखों के सामने नाचने लग जाता है. दिल में टीस उठती है. रूह तक लहूलुहान हो जाती है.

लेकिन क्या ये सच नहीं है कि एक किसान की मौत के साथ उसके परिवार का हर व्यक्ति मारा है. एक आंकड़े के पीछे कितनी बर्बादी की कहानियां है . इन 50,000 आत्महत्याओं ने दरअसल 2 लाख जानो को मौत के घाट उतरा है ?? कोई कफन ओर कई जिन्दा लाशें. इतनी मौते तो 1950 से आज तक बॉर्डर पर पड़ोसी देशो के साथ होने वाले युद्ध में भी नहीं गवाई जितनी की सीमाओं के अंदर गवाई।

आखिर कौन है इस नरसंहार का जिम्मेवार?

आज जब किसान, Kisan Mukti March लेकर देश के हर कोने से देश की राजधानी में आया है तो वो इस मौत के हमेशा मंडराते हुए साए को चुनौती देने आया है.आज वो दृढ़ निश्चयी है. कर्ज की माफी और अनाज पर सही दाम मांग रहा है. ये उसका हक है जितना की सम्मान की जिन्दगी जीना भी उसका हक है.

फिर भी इन भयानक आंकड़ो से नजर नहीं हटाती है. ये नरसंहार क्यों और कैसे हुआ? किसने कराया? क्या पाश्वभूमि है इन किसानों की. क्या समाज में सिर्फ वह किसान की पहचान लेकर चल रहे या कुछ और भी है. गांव में कस्बो में उन्हें क्या सिर्फ किसान कर के ही जाना जाता व्यव्हार होता , राज्य की स्कीम तक पहुँच होती है या और भी कुछ है. क्या सिर्फ पूँजीवाद का ही केहर काम कर रहा है उनके ऊपर? क्या कोई भी सामाजिक ताकते उनपर अपना असर नहीं छोड़ रही. अगर ऐसा है तो इन आत्महत्या करने वाले 50,000 किसानों में एक भी ब्राह्मण द्विज क्यों नहीं है? अगर आपके पास एक भी नाम या उदहारण हो तो बताये मुझे . क्या पूंजीवाद का असर ब्राह्मण द्विज किसान पर नहीं पद रहा. अगर पड़ रहा तब वो क्यों नहीं मर रहा?

फिर भी इन भयानक आंकड़ो से नजर नहीं हटाती है. ये नरसंहार क्यों और कैसे हुआ? किसने कराया? क्या पाश्वभूमि है इन किसानों की. क्या समाज में सिर्फ वह किसान की पहचान लेकर चल रहे या कुछ और भी है. गांव में कस्बो में उन्हें क्या सिर्फ किसान कर के ही जाना जाता व्यव्हार होता , राज्य की स्कीम तक पहुँच होती है या और भी कुछ है. क्या सिर्फ पूँजीवाद का ही कहर काम कर रहा है उनके ऊपर? क्या कोई भी सामाजिक ताकते उनपर अपना असर नहीं छोड़ रही. अगर ऐसा है तो इन आत्महत्या करने वाले 50,000 किसानों में एक भी ब्राह्मण द्विज क्यों नहीं है? अगर आपके पास एक भी नाम या उदहारण हो तो बताये मुझे . क्या पूंजीवाद का असर ब्राह्मण द्विज किसान पर नहीं पद रहा. अगर पड़ रहा तब वो क्यों नहीं मर रहा?

किसानों के हाथों में लाल झंडे पकड़वाने वाले लीडर, मार्च आयोजित करने वाले संगठन , मंच पर बोलने वाले नेता , टीवी चैनल पर बोलने वाले एंकर और एक्सपर्ट, documentaries बनाने वाले एक्टिविस्ट सब सवर्ण ब्राह्मण और मरने वाला ओबीसी, मराठा , गैर ब्राह्मण गैर द्विज किसान ??

जैसे की Communist कहते है कि ये class struggle है तो फिर सिर्फ socially बैकवर्ड गैर ब्राह्मण ही क्यों मर रहा है ? क्या पूरे देश में गरीब ब्राह्मण किसान है ही नहीं. अगर है तो इस मौत के तूफान में वो कैसे नहीं फंसे ??

मेरा ये मत है कि किसानों ने खुद इस विसंगति को पहचानना होगा और अपने आंदोलन को जाति निर्मूलन के आंदोलन के साथ चलना होगा. साथ ही बैकवर्ड क्लासेस के सामाजिक राजनितिक संघठनो ने किसानों के मसले को सबसे ऊपर रख कर इसे राष्ट्रीय स्तर पर लगातार चर्चा में लाकर और संघटित शक्ति के जोर पर सरकार पर जोर डालकर या अपनी सरकार बना कर इस नरसंहार को रोकना होगा.

अगर ऐसा नहीं हुआ तो जिस तरह सर छोटू राम ने कहा था कि "हे किसान तू अपने दुश्मनों को पहचान" किसान अपना दुश्मन ब्राह्मणवादी व्यवस्था और ब्राह्मणी प्रछन्न नेतृत्व में नहीं पहचान सकेगा और उसके दमन तथा आत्महत्याओं का सिलसिला ऐसे ही जारी रहेगा .

किसानों की बदहाली की जड़ ब्राह्मणवाद में है तो हल भी ब्राह्मणवाद के खात्मे के आंदोलन से निकलेगा, ब्राह्मण सवर्णो के चलाये हुए प्रछन्न आंदोलनों और नेतृत्व से नहीं .

चुनावी लाभ के लिए बुलंदशहर को दंगों की आग में झोंकने की साजिश वाले बजरंग दल के कर्ता-धर्ता को बचाने में जुटे हैं यूपी पुलिस के बड़े अधिकारी

वीरेन्द्र सिंह दहिया

सीधी सी बात है ये सब किया जा रहा है योगी आदित्यनाथ की सरकार के इशारों पर। एक नौजवान और एक पुलिस अधिकारी की बलि लेने वाले इस षड्यंत्र के राज अब लोगों के सामने आने लगे हैं।

जिन गौवंशों के अवशेषों को 3 दिसंबर को मारे गए पशुओं का बताया जा रहा था वे दो दिन पहले के पाए गए, इतना ही नहीं बल्कि पशुओं के उन अंगों को खेतों में लटका दिया गया था। जो गौहत्या करेंगे वे क्या मृत पशुओं के बचे अंगों को खेतों में लटका कर प्रदर्शनी लगाएंगे?

भाजपा के कई नेता पहले ही कह चुके कि इस बवाल में बजरंग दल व उसके स्थानीय नेता योगेशराज की कोई भूमिका नहीं है और अब पुलिस भी मुख्य आरोपी को क्लीन चिट देने की जल्दबाजी दिखा रही है। आईजी रेंज मेरठ ने कहा है कि अभी तक की जाँच में योगेशराज की भूमिका सामने नहीं आई है जबकि घटनास्थल के कई वीडियो वायरल हो रहे हैं जिनमे योगेशराज सबसे आगे है। ये भी ध्यान देने की बात है कि डीजीपी मुख्यालय के प्रवक्ता आईजी क्राइम एस के भगत के मुताबिक गौवंश अवशेष दो दिन पुराने थे और दंगे भड़काने व इंस्पेक्टर सुबोध सिंह के कत्ल के जिम्मेदार योगेशराज ने एफआईआर में लिखवाया कि गौवंश 3 दिसंबर को उसके सामने काटे गए थे।

ये भी ध्यान रहे कि बुलंदशहर में तब्लीगी इत्जमा में भारी संख्या में मुसलमान पहुँचे थे और बजरंग दल वालों की दंगे भड़काने की ये साजिश अगर कामयाब हो जाती तो जान-माल का बड़े पैमाने पर नुकसान हो सकता था जो कि इलाके के समझदार लोगों और इंस्पेक्टर सुबोध सिंह जैसे अफसरों की वजह टल गया।

ये कहानी एक ज्वलंत उदाहरण है राजकीय षड्यंत्र का जिसमें राजनीतिक लाभ लेने के लिए सरे आम दंगे भड़काने और एक पुलिस अफसर के कातिल अपराधी को बचाया जा रहा है।

ये सिर्फ बेशर्म ही नहीं बहुत बड़े षडयंत्रकारी हैं। इन लोगों से देश की जनता को बचाना सही व जनवादी सोच रखने वाले लोगों का पहला काम है।